विचार बिन्दु

एकता का किला सबसे सुरक्षित होता है। न वह टूटता है और न उसमें रहने वाला कभी दुःखी होता है। –अज्ञात

दोराहे पर खड़ा है भारतीय मध्यम वर्ग!

भारत की विशाल जनसंख्या और आर्थिक असमानताओं के कारण मध्यम वर्ग की जनसंख्या का अनुमान लगाना चुनौतीपूर्ण है। वैसे, प्यू रिसर्च सेंटर की 2020 की एक रिपोर्ट बताती है कि 2019 में लगभग 6.6 करोड़ भारतीय वैश्विक मध्यम वर्ग में शामिल थे, जो भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 5 प्रतिशत है। लेकिन, यहीं यह बात भी ध्यान में रखी जानी चाहिए कि भारतीय मानकों के अनुसार परिभाषित किए जाने पर भारत में मध्यम वर्ग काफी बड़ा है, और यह देश की अनूठी सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता को दर्शाता है।

मध्य वर्ग की समाजशास्त्रीय अवधारणा दो प्रसिद्ध विचारकों –कार्लमार्क्स और मैक्स वेबर – के सिद्धांतों से प्रभावित हुई मानी जाती है। ये सिद्धांत भारत में मध्यम वर्ग के उदय और विकास का अध्ययन करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। कार्लमार्क्स का वर्ग संघर्ष का सिद्धांत मुख्य रूप से समाज को दो विरोधी वर्गों में विभाजित करता है: बुर्जुआ वर्ग (पूंजीपति) और सर्वहारा वर्ग (श्रमिक)। कार्लमार्क्स ने स्पष्ट रूप से मध्यम वर्ग का ज़िक्र नहीं किया है लेकिन हम मान सकते हैं कि वे मध्यम वर्ग को उत्पादन के साधनों के स्वामी पूजीपति वर्ग में शामिल मानते थे। यह देखना बहुत रोचक होगा कि मार्क्स ने भविष्यवाणी की थी कि मध्यम वर्ग अंततः कम होता जाएगा। वहया तो आर्थिक कठिनाइयों के कारण सर्वहारा वर्ग में समाहित हो जाएगा या बढ़ती संपत्ति के कारण उच्च पूंजीपति वर्ग में विलीन हो जाएगा। लेकिन कम से कम भारत में तो ऐसा नहीं हुआ। भारत में लगातार बने रहने वाला और बढ़ता हुआ मध्यम वर्ग मार्क्स की भविष्यवाणी के विपरीत है। मार्क्स से अलहदा मैक्स वेबर ने वर्ग की अधिक सूक्ष्म समझ प्रस्तुत की जो आर्थिक निर्धारकों से परे है। वेबर के अनुसार, वर्ग एक बहुआयामी संरचना है जिसमें प्रतिष्ठा और शक्ति जैसे कारक शामिल हैं। वेबर के अनुसार, मध्यम वर्ग वे लोग हैं जो उचित स्तर की आर्थिक समृद्धि का आनंद लेते हैं, अपनी पेशेवर भूमिकाओं के माध्यम से कुछ हद तक शक्ति का प्रयोग करते हैं और सामाजिक सम्मान प्राप्त करते हैं। वेबर का दृष्टिकोण भारत में मध्यम वर्ग की विविधता और गतिशीलता को सटीक रूप से दर्शाता है।

स्वतंत्रता के बाद भारतमें अनेक सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों से प्रभावित मध्यम वर्ग की विकास यात्रा, अत्यंत रोचक है। स्वतंत्रता के तत्काल बाद के काल में मध्यम वर्ग अपेक्षाकृत सीमित था, जिसमें अधिकतर सरकारी कर्मचारी, पेशेवर और छोटे व्यापारी शामिल थे। इस अवधि के दौरान अपनाई गईआर्थिक नीतियां, जिनमें राज्य का हस्तक्षेप प्रमुख था, मध्यम वर्ग के विकास को उल्लेखनीय रूप से बढ़ावा नहीं दे पाईं। लेकिन 1980 के दशक से स्थिति बदलने लगी। विशेष रूप से उदारीकरण के बाद के युग में, जिसमें मध्यम वर्ग की आबादी में अभूतपूर्व वृद्धि देखी गई। अर्थव्यवस्था के उदारीकरण ने सूचना प्रौद्योगिकी और सेवाओं जैसे उद्योगों के विकास को गति दी, जिससे रोजगार के प्रचुर अवसर पैदा हुए और परिणामस्वरूप कई लोग मध्यम वर्ग में शामिल हो गए। इधर भारत में एक और अभिव्यक्ति चलन में आई है– नया मध्यम वर्ग। इस अभिव्यक्ति का प्रयोग भारत की नई अर्थव्यवस्था से प्रेरित उभरते मध्यम वर्ग के विभिन्न समूहों का वर्णन करने के लिए किया जाता है। पारंपरिक मध्यम वर्ग, जो मुख्य रूप से सरकारी कर्मचारियों और पेशेवरों तक सीमित था, के विपरीत, इस नए मध्यम वर्ग में युवा, तकनीक-प्रेमी व्यक्ति और परिवार शामिल हैं जो आईटी, ई-कॉमर्स, मीडिया और वित्त जैसे विविध क्षेत्रों में कार्यरत हैं। इस वर्ग की कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं:– इसके पास अधिक खर्च करने योग्य आयहै, इसका डिजिटल प्रौद्योगिकी के प्रति तीव्र झुकाव है, और भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के साथ सम्पर्क के कारण इसका दृष्टिकोण वैश्विक है।

मार्क्स से अलहदा मैक्स वेबर ने वर्ग की अधिक सूक्ष्म समझ प्रस्तुत की जो आर्थिक निर्धारकों से परे है। वेबर के अनुसार, वर्ग एक बहुआयामी संरचना है जिसमें प्रतिष्ठा औरशक्तिजैसे कारक शामिल हैं। वेबर के अनुसार, मध्यम वर्ग वे लोग हैं जो उचित स्तर की आर्थिक समृद्धि का आनंद लेते हैं, अपनी पेशेवर भूमिकाओं के माध्यम से कुछ हद तक शक्ति का प्रयोग करते हैं और सामाजिक सम्मान प्राप्त करते हैं।

इधर इस वर्ग की संरचना में कुछ ख़ास बदलाव देखे जा रहे हैं। पहले जहां भारत का मध्यम वर्ग संयम, परिश्रम और संतोष को अपने जीवन का मूल मंत्र मानता था, अब वह आकांक्षा, प्रतिस्पर्धा और अनिश्चितता के मकड़जाल में उलझा नज़र आता है। पहले इस मध्यम वर्ग की पहचान सीमित इच्छाओं, सुनिश्चित रोज़गार और धीमी लेकिन स्थिर प्रगति जैसी बातों से थीं। एक सरकारी नौकरी, छोटा-सा घर, बच्चों की शिक्षा और सम्मानजनक सामाजिक हैसियत- जैसे ये ही उसके सपने थे। 1954 की एक फ़िल्म 'नौकरी' में किशोर कुमार का गाया एक गीत जैसे इस वर्ग की पूरी तस्वीर सामने ले आता है:– छोटा-सा घर होगा बादलों की छांव में/ आशा दीवानी मन में बांसुरी बजाय। लेकिन आज का मध्यम वर्ग इससे बहुत आगे निकल चुका है। थोड़ा है, थोड़े की ज़रूरत है अब उसके जीवन का मूल मंत्र नहीं रह गया है। उदारीकरण के बाद वाली पीढ़ी में सपनों को लाइफ़स्टाइल ने और संतोष को कम्पैरिज़न ने विस्थापित कर दिया है। इस वर्ग के पास असीमित आकांक्षाएं हैं और उन्हें पूरी करने के लिए ईएमआई और क्रेडिट कार्ड जैसे जादूगर हैं। सोशल मीडिया और बाज़ार लगातार इस वर्ग की आकांक्षाओं को हवा देते और भड़काते हैं। यह वर्ग संतुष्ट रहने के लिए नहीं, दूसरों से आगे निकलने के लिए व्याकुल रहता है।

भारत सरकार की नीतियों में आए बदलावों की वजह से सरकारी नौकरियां बहुत कम हुई हैं और जो बची हैं उनमें भी सेवा निवृत्ति के बाद की सुरक्षा संबंधी प्रावधान संकुचित हुए हैं। परिणामतः मध्यम वर्ग अब अपनी आजीविका के लिए निजी क्षेत्र का मुखापेक्षी हुआ है। यहां नौकरी का स्थायित्व नहीं है, काम के ज़्यादा घण्टे हैं। उधर सामाजिक सुरक्षा का बदला ढांचा उसे बहुत सारी सरकारी सुविधाओं के लाभ से वंचित रखता है। शिक्षा और चिकित्सा अब पहले से बहुत ज़्यादा महंगी हो गई है। इन सबका परिणाम यह है कि आज के भारतीय मध्यम वर्ग को अधिक तनाव, अवसाद और संघर्ष में जीना पड़ रहा है। इस मध्यम वर्ग की एक और ख़ास विशेषता यह है कि यह राजनीति से विरत होता जा रहा है। नीतिगत मुद्दों और आधारभूत बातों में इसे कोई रुचि नहीं है। इनकी जगह राष्ट्रवाद,धार्मिकता और छद्म नैतिकता के सवाल इसे अधिक विचलित करते हैं और इसकी सारी ऊर्जा इन्हीं हवाई मुद्दों पर खर्च होती है। यह वर्ग पूरा टैक्स चुकाता है लेकिन सरकार से कभी सवाल नहीं करता है कि उसके चुकाए टैक्स का वह किस तरह उपयोग कर रही है या कि सरकार की किसी प्राथमिकता में यह वर्ग क्यों नहीं है। बजाय सवाल करने के, यह जैसे-तैसे गुज़ारा करने की हताश मानसिकता में जीने का अभ्यस्त हो गया है। यह वर्ग असंतुष्ट तो है लेकिन इसका असंतोष कोई सकारात्मक और सक्रियता भरा रूप नहीं ले रहा है।

इससे भी बड़ी चिंता की बात यह है कि इस वर्ग की नैतिकता अब पूरी तरह अदृश्य हो चुकी है। ईमानदारी अब कोई मूल्य रह ही नहीं गया है। जो वर्ग दूसरों की बेईमानी देख तनिक भी कुपित या विचलित नहीं होता, स्वभावतः उसे ख़ुद ऐसा करने में कोई संकोच नहीं रह गया है। आज एकमात्र मानदण्ड सफलता है, वह चाहे कैसे भी हासिल की जाए। परीक्षाओं के पर्चे खुले आम खरीदे जाते हैं, अपनी जगह दूसरों को परीक्षा दिलवाई जाती है, रिश्वत के पैसों से वैभव पूर्ण ज़िंदगी जी जाती है और विभिन्न अवसरों पर इन अनैतिक तरीकों से अर्जित पूंजी का अश्लील व भोण्डा प्रदर्शन किया जाता है, लेकिन इस सबको देखकर कोई तनिक भी विचलित नहीं होता है।

मुझे यह बात बहुत बुरी लगती है कि आज के मध्यम वर्ग ने अपना नागरिक बोध पूरी तरह तिरोहित कर दिया है। वह केवल अपने लिए जी रहा है। जब देश आज़ाद हुआ तब की युवा पीढ़ी में जो सामूहिकता का भाव था, जो उत्तरदायित्व बोध था वह अब सुलभ नहीं रह गया है। उसे तलाश करना पड़ता है। हममें से हरेक अब केवल और केवल अपने लिए और वर्तमान में जी रहा है। इस समूह को न औरों की परवाह है और न आने वाले कल की।

असल में भारत का मध्यम वर्ग आज एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहां उसे सफलता और सार्थकता में से किसी एक को चुनना है। उसे यह चुनना है कि वह दूसरों द्वारा इस्तेमाल किया जाता रहेगा या ख़ुद अपनी राह बनाएगा। हो सकता है आज वह जैसे तैसे अर्जित अपने वैभव और सफलता के नशे में चूर हो, लेकिन उसे यह समझना होगा कि इस तरह की सफलता स्थायी नहीं होती है। एक न एक दिन उसका यह भ्रम टूटेगा। लेकिन तब तक पीछे लौटने के रास्ते भी बंद हो चुके होंगे।

यह सही समय है जब भारतीय मध्यम वर्ग अपनी राह चुने। वह अपने अधिकार की मांग करे, जो ग़लत है उसके खिलाफ़ आवाज़ बुलंद करे और जो सही है उसको अपना सक्रिय समर्थन दे!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

कर्ज़ और संवेदनहीनता: क्या भारत की बैंकिंग व्यवस्था को आत्ममंथन की ज़रूरत है?

सुनील दत्त गोयल

भारत में बैंकिंग व्यवस्था को अक्सर अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहा जाता है। यह वही व्यवस्था है जो उद्योगों को पूँजी देती है, घर बनवाती है, युवाओं को पढ़ने का अवसर देती है और व्यापार को आगे बढ़ाती है। लेकिन आज एक गंभीर सवाल खड़ा हो रहा है – क्या यह व्यवस्था अपने मूल उद्देश्य से भटक चुकी है? क्या बैंक अब वित्तपोषक कम और दंडाधिकारी अधिक बनते जा रहे हैं?

प्रोजेक्ट फाइनेंस नहीं, केवल मॉर्टगेज का राज

भारत में चाहे हाउसिंग लोन हो, एमएसएमई लोन, फैक्ट्री प्रोजेक्ट या किसी संस्था को दिया गया ऋण – लगभग हर जगह एक ही मॉडल चलता है: मॉर्टगेज-आधारित लोन।

यहाँ प्रोजेक्ट की व्यवहारिकता, भविष्य की नकदी प्रवाह (cash flow) या कारोबारी संभावना से ज़्यादा महत्व इस बात को दिया जाता है कि गिरवी क्या है?

परिणाम यह होता है कि –

ज़मीन गिरवी, उस पर बनने वाला भवन गिरवी, मशीनरी गिरवी, डायरेक्टर या प्रमोटर की पर्सनल गारंटी, और अक्सर उसका निजी मकान भी। बैंक और वित्तीय संस्थानों का रवैया कई बार ऐसा प्रतीत होता है मानो वे कर्ज़ देने नहीं, बल्कि भविष्य के कब्ज़े की तैयारी कर रहे हों।

हाउसिंग लोन: सबसे सुरक्षित, फिर भी सबसे कठोर रवैया।

यदि हाउसिंग लोन की बात करें, तो यह बैंक के लिए सबसे सुरक्षित ऋणों में से एक है। आम तौर पर बैंक 20-30 प्रतिशत का मार्जिन रखता है। यानी 50 लाख का लोन देने पर संपत्ति की कीमत लगभग 70 लाख होती है। इसके बाद हर ईएमआई के साथ बैंक का जोखिम और घटता जाता है।

इसके अलावा, भारत में स्थायी संपत्ति का मूल्य समय के साथ बढ़ता ही है। ऐसे में अगर कोई कर्ज़दार 15-20 किस्तें चुका चुका हो और फिर किसी कारणवश 2-3 ईएमआई में चूक हो जाए, तो यह मान लेना कि बैंक को भारी नुकसान हो गया – यह तर्कसंगत नहीं लगता।

रिकवरी एजेंट या भय का उद्योग?

यहीं से शुरू होता है बैंकिंग व्यवस्था का सबसे डरावना चेहरा।

डिफॉल्ट होते ही कई बैंकों और NBFCs का ध्यान समाधान पर नहीं, बल्कि रिकवरी एजेंटों पर चला जाता है। इन एजेंटों की कार्यप्रणाली कई बार कानून से ज़्यादा डर पर आधारित होती है।

फोन पर धमकियाँ, घर और कार्यस्थल पर दबाव, परिवार को मानसिक रूप से प्रताड़ित करना, सामाजिक बदनामी का भय।

यह सब उस व्यक्ति के साथ किया जाता है जिसने पहले ही अपनी 20-30 प्रतिशत पूँजी लगा रखी है और जो अक्सर किसी अस्थायी संकट से गुजर रहा होता है।

पैसा वसूल लिया, फिर क्या?

मान लीजिए बैंक ने किसी व्यक्ति को पूरी तरह तोड़कर, उसकी फैक्ट्री बंद करवा कर या उसे बेघर करके पैसा वसूल भी कर लिया – तो इसके बाद क्या?

वही पैसा फिर किसी और को कर्ज़ के रूप में दिया जाएगा। वहाँ भी 100 में से 5-15 लोग डिफॉल्ट करेंगे। फिर वही प्रक्रिया, वही दबाव, वही भय।

–यह एक अनंत चक्र है, जो न बैंकिंग व्यवस्था को मज़बूत करता है, न समाज को।

–कर्ज़ अपराध नहीं, व्यापारिक जोखिम है। आज भी हमारे बैंक यह स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं कि कर्ज़ लेना कोई अपराध नहीं है। यह एक व्यापारिक लेन-देन है, जिसमें जोखिम दोनों तरफ होता है। अगर किसी की नौकरी चली गई, व्यापार में घाटा हो गया या आर्थिक मंदी आ गई – तो इसका मतलब यह नहीं कि वह व्यक्ति अपराधी बन गया। अक्सर ऐसे लोग कुछ समय में दोबारा खड़े हो जाते हैं। यही वह समय होता है जब बैंकों को साझेदार की तरह व्यवहार करना चाहिए, न कि सज़ा देने वाले की तरह।

70 प्रतिशत बैंक का पैसा, फिर इतनी घबराहट क्यों?

एक साधारण गणित है – अधिकांश मामलों में कर्ज़दार पहले ही 20-30 प्रतिशत योगदान कर चुका होता है। शेष 70-80 प्रतिशत बैंक का पैसा होता है। अगर बैंक वास्तव में अपने पैसे को सुरक्षित रखना चाहता है, तो सबसे समझदारी भरा तरीका यही है कि कर्ज़दार को सहारा दिया जाए, न कि उसे तोड़ा जाए।

लोन रिस्ट्रक्चरिंग, ईएमआई रीशेड्यूलिंग, अस्थायी राहत या ठोस पीरियड

ये सब कोई दया नहीं, बल्कि व्यावसायिक बुद्धिमत्ता है।

रिकवरी विज्ञापन: आर्थिक विवेकहीनता

अख़बारों में अक्सर यह दृश्य देखने को मिलता है कि 2-3 लाख के डिफॉल्ट लोन के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर के अख़बारों में महंगे विज्ञापन दिए जाते हैं। कई बार वकीलों की फीस, नोटिस और विज्ञापन पर 40-50 हजार तक खर्च हो जाता है।

सवाल यह है – क्या बैंक पैसा वसूलने निकले हैं या पैसा खर्च करने?

सरकार को यहाँ स्पष्ट नीति बनानी चाहिए कि रिकवरी पर होने वाला खर्च बकाया राशि के एक सीमित प्रतिशत से अधिक कर्ज़दार पर न डाला जाए।

एजुकेशन लोन: नीति और व्यवहार के बीच खाई

यह देश का दुर्भाग्य है कि जहाँ होम लोन और ऑटोमोबाइल लोन अपेक्षाकृत कम ब्याज दरों पर उपलब्ध हैं, वहीं शिक्षा जैसे सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र के लिए लिया जाने वाला एजुकेशन लोन सबसे महँगा बना दिया गया है। सरकार का स्पष्ट उद्देश्य यह रहा है कि कोई भी योग्य छात्र केवल पैसों के अभाव में उच्च शिक्षा से वंचित न रह जाए। इसी उद्देश्य से सरकार एजुकेशन लोन पर कई प्रकार की राहत और सब्सिडी प्रदान करती है।

सरकार द्वारा एजुकेशन लोन पर आयकर अधिनियम की धारा 80ई के तहत ब्याज पर टैक्स छूट दी जाती है, ताकि पढ़ाई पूरी होने के बाद छात्र पर वित्तीय बोझ कम रहे। इसके अलावा, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों (ईडब्ल्यूएस) के लिए ब्याज सब्सिडी योजनाएँ चलाई जाती हैं, जिनमें पढ़ाई की अवधि और मोराटोरियम पीरियड के दौरान ब्याज सरकार वहन करती है। कई योजनाओं में बिना कोलैटरल एक निश्चित सीमा तक लोन देने की भी नीति बनाई गई है, ताकि सामान्य परिवारों के बच्चों को अवसर मिल सके।

लेकिन दुर्भाग्य यह है कि बैंकों ने इन सरकारी रियायतों को छात्रों तक पहुँचाने के बजाय, अपने ब्याज दरों में जोड़कर मुनाफ़े का माध्यम बना लिया है। बैंक यह तर्क देते हैं कि चूँकि छात्र को आयकर में छूट मिलती है, इसलिए ऊँची ब्याज दर भी व्यवहारिक है। हकीकत यह है कि सरकार ने जो राहत छात्र को देने के लिए बनाई थी, उसका वास्तविक लाभ छात्र को मिलने के बजाय बैंक की बैलेंस शीट में चला जाता है। लेकिन वास्तविकता बिल्कुल उलट है।

आज भारत में – एजुकेशन लोन की ब्याज दर बहुत अधिक है। कई मामलों में 10 से 16 प्रतिशत तक विडंबना यह है कि हाउसिंग लोन सस्ता है, लेकिन शिक्षा महंगी।

टैक्स छूट का बैंकिंग दुरुपयोग

बैंकों का तर्क होता है कि एजुकेशन लोन पर आयकर में छूट मिलती है। लेकिन यह छूट सरकार ने छात्र को दी है, बैंकों को नहीं।

बैंक उसी छूट को आधार बनाकर ब्याज दरें बढ़ा देते हैं, जिससे छात्र को कोई वास्तविक लाभ नहीं मिलता। यदि एजुकेशन लोन हाउसिंग लोन जैसी दरों पर मिले, तभी टैक्स छूट का असली फायदा छात्र तक पहुँचेगा।

बिना कोलैटरल एजुकेशन लोन: सिर्फ़ काग़ज़ों में

तेलंगाना के पूर्व मंत्री और वरिष्ठ विधायक टी. हरीश राव का हालिया उदाहरण इस व्यवस्था की कठोर सच्चाई को उजागर करता है। सिद्दीपेट की एक होनहार छात्रा कोंका ममता, जिसे एमबीबीएस के बाद महबूबनगर स्थित एसवीएस मेडिकल कॉलेज में पीजी (ऑफ्थैल्मोलॉजी) में प्रवेश मिला था, जब एजुकेशन लोन के लिए बैंक पहुँची, तो बैंक ने उससे संपत्ति गिरवी रखने की शर्त रख दी। छात्रा के पिता रामचंद्रम, जो पेशे से दर्जी हैं, के पास गिरवी रखने के लिए कोई संपत्ति नहीं थी। ऐसी स्थिति में पूर्व मंत्री टी. हरीश राव को न केवल हस्तक्षेप करना पड़ा, बल्कि बैंक से लोन स्वीकृत कराने के लिए अपना सिद्दीपेट स्थित निजी मकान ही गिरवी रखना पड़ा। यदि एक पूर्व मंत्री और विधायक को भी शिक्षा के लिए लोन दिलाने हेतु यह असाधारण कदम उठाना पड़े, तो यह सहज ही समझा जा सकता है कि एक आम नागरिक के लिए एजुकेशन लोन प्राप्त करना कितना विकट, अपमानजनक और लगभग असंभव हो गया है। यह घटना किसी एक परिवार की मजबूरी नहीं, बल्कि देश की एजुकेशन लोन नीति और बैंकिंग मानसिकता पर एक गहरा प्रश्नचिह्न है।

व्यवहार में 30-50 लाख का एजुकेशन लोन बिना कोलैटरल मिलना लगभग असंभव है।

अगर माता-पिता सरकारी कर्मचारी हैं, तो सैलरी या पेंशन के खिलाफ लोन मिल जाता है। लेकिन व्यापारी या सामान्य नागरिक के लिए मकान या अन्य संपत्ति गिरवी रखना लगभग अनिवार्य है।

यह वही मॉर्टगेज मानसिकता है, जिसने पूरी बैंकिंग व्यवस्था को जकड़ रखा है।

आरबीआई और सरकार की चुप्पी

सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि सरकार और दोनों को इन तथ्यों की जानकारी है। इसके बावजूद एजुकेशन लोन की ऊँची दरों और कठोर शर्तों पर कोई ठोस हस्तक्षेप नहीं दिखाई देता।

शिक्षा व्यापार नहीं, राष्ट्र निर्माण का निवेश है

शिक्षा कोई उपभोग की वस्तु नहीं, बल्कि राष्ट्र के भविष्य में निवेश है।

आज जिस छात्र को महंगे ब्याज और गिरवी की शर्तों में जकड़ा जा रहा है, वही कल करदाता, उद्यमी और रोजगारदाता बनेगा। यदि एजुकेशन लोन भी हाउसिंग लोन या ऑटो लोन की तरह कम ब्याज दरों पर दिया जाए, तभी सरकार द्वारा दी गई टैक्स छूट और ब्याज सब्सिडी का वास्तविक और नैतिक लाभ छात्रों और उनके परिवारों तक पहुँचेगा। अन्यथा यह पूरी व्यवस्था शिक्षा को प्रोत्साहन देने के बजाय, उसे और महँगा तथा डरावना बनाने का माध्यम बन जाती है।

निष्कर्ष: बैंकिंग को डर से नहीं, विवेक से चलाना होगा। भारत की बैंकिंग व्यवस्था को अब आत्ममंथन करना होगा। कर्ज़दार को दुश्मन नहीं, भागीदार मानना होगा। रिकवरी की जगह समाधान, और डर की जगह भरोसे को प्राथमिकता देनी होगी। क्योंकि मज़बूत बैंकिंग व्यवस्था वही होती है, जो केवल पैसा नहीं गिनती – भविष्य भी बनाती है।

–रोटेरियन सुनील दत्त गोयल
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री

"घूमर" लोकनृत्य ने शिल्पग्राम उत्सव में दर्शकों का मन मोहा

शिल्पग्राम उत्सव में मुक्ताकाशी मंच पर लोकनृत्य घूमर सहित कई राज्यों के कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति देकर दर्शकों का मन मोह लिया।

उदयपुर, (निसं)। जब बनी-ठनी महिलाओं ने गोल घेरे में घूमते हुए घेरदार, रंग-बिरंगे और भारी घाघरे से नयनाभिराम घेरा बनाया तो दर्शकों ने तालियों से शिल्पग्राम को गूंजा दिया। इसमें सजी-धजी महिलाओं की लयकारी, भाव-भंगिमाएं और तालबद्धता ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। यह लोकनृत्य घूमर किशनगढ़ (राजस्थान) किशनगढ़ की प्रसिद्ध बणी-ठणी चित्रकला शैली से जुड़ी है, जो अपने सौंदर्य और कला के लिए दुनिया भर में मशहूर है और महाराजा सावंत सिंह (नागरीदास) के समय में विकसित हुई। सर्वविदित है कि 'घूमर' राजस्थान की लोक संस्कृति का अहम हिस्सा है और अक्सर त्योहारों और समारोहों में किया जाता है। रविवार की शाम इस लोकनृत्य की प्रस्तुति ने खचाखच भरे मुक्ताकाशी मंच का मन मोह लिया। तमाम दर्शकों ने झूमते हुए नर्तकियों के कौशल को खूब सराहा। इसके साथ ही राजस्थान के ही लोकनृत्य तेराताली में नर्तकियों ने ताल दी तो दर्शकों ने खुलकर दादा दी। यह प्रदेश की कामड़ जाति का विशेष और एकमात्र लोकनृत्य है, जो बैठकर किया जाता है, फिर भी दर्शकों का मन मोह लेता है। इसमें नर्तकियों ने मुंह में कटार दबा सिर पर कलश रखकर नृत्य किया तो दर्शकों ने तालियों से शिल्पग्राम को गूंजा दिया।

इनके साथ ही पश्चिम बंगाल के

■ मुक्ताकाशी मंच पर कई राज्यों की लोक संस्कृति की झलक देख दर्शक हुए अभिभूत

राय बेंसे में एक्रोबेटिक करतब, महाराष्ट्र के लावणी लोक नृत्य में नर्तकियों के शृंगार व अदाकारी, राजस्थान के कालबेलिया डांस में नर्तकियों के करतबों ने दर्शकों का दिल जीत लिया। वहीं, पश्चिम बंगाल के पुरुलिया छाऊ डांस में शास्त्रीय के साथ मार्शल आर्ट के खूबसूरत सम्मिश्रण के साथ ही सिद्धि धमाल की पेशकश ने दर्शकों को दांतों तले अंगुली दबाने को विवश कर दिया।

राजस्थान के मेवात क्षेत्र के भपंग वादन से लोक कलाकार श्रोताओं के दिलों के तारों को झंकृत कर दिया। वहीं, उत्तराखंड के मीठी छेड़छाड़ वाले छापेली लोक नृत्य ने दर्शकों को खूब गुदगुदाया, तो असम का बिहू डांस भी दर्शकों को खूब भाया। इनके साथ ही मणिपुर की नृत्य शैली के साथ मार्शल आर्ट के अनूठे संगम वाले थांग-ता स्टिक डांस ने दर्शकों को खूब रोमांचित किया। वहीं, मस्ती के लिए पहचाने जाने वाले पंजाब का भांगड़ा डांस पर दर्शक अपनी जगह पर झूमने लगे। सिंघी छम, कर्ण ढोल और ब्रज के मयूर नृत्य की प्रस्तुतियां ने भी दर्शकों को खूब रिझाया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मोहिता दीक्षित और माधुरी शर्मा ने किया। मुख्य कार्यक्रम से पूर्व मुक्ताकाशी मंच पर सुंदरी वादन, कुच्छी भजन और भवई नृत्य की प्रस्तुति ने दर्शकों को बांधे रखा।

शिल्पग्राम के बंजारा मंच पर चल रहे 'हिवड़ा री हूक' कार्यक्रम के रविवार को भी हर उम्र के मेलार्थियों के लिए आकर्षण का केंद्र बना। इसमें मेलार्थियों ने खुलकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम समन्वयक सौरभ भट्ट ने प्रश्नोत्तरी से कार्यक्रम को और रोचक बना दिया। क्विज में सही उत्तर देने वालों को हाथों-हाथ उपहार भी दिए जा रहे हैं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 29 दिसम्बर, 2025

पौष मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, रेवती नक्षत्र प्रातः 7:41 तक, परिध योग प्रातः 7:36 तक, कौलव करण दिन 10:13 तक, चन्द्रमा आज प्रातः 7:41 से मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मीन, मंगल-धनु, बुध-वृश्चिक, गुरू-मिथुन, शुक्र-धनु, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग प्रातः 7:41 से आरम्भ होगा। आज बुध धनु राशि में प्रातः 7:13 पर प्रवेश करेगा। बुध अस्त पूर्व रात्रि 1:30 पर होगा। पंचक प्रातः 7:41 पर समाप्त होंगे। आज श्री हरि जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:36 तक, शुभ 9:54 से 11:11 तक, चर 1:46 से 3:04 तक, लाभ-अमृत 3:04 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:19, सूर्यास्त 5:38 तक

मेष
मानसिक तनाव से राहत मिलेगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों के कारण अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है और आपसी अनबन का भय है। आज मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

तुला
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

वृश्चिक
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

धनु
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

कुंभ
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज नये-पुराने मित्रों से संपर्क बनेंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।